पाठ-योजना का अर्थ, महत्त्व, इकाई और मासिक योजना का लक्ष्य

(Lesson-Planning — Meaning, Importance, Purpose of Unit and Monthly Plans

प्रभावशाली एवं निपुण शिक्षकों के निर्माण के लिये शिक्षण के क्षेत्र में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों पक्षों पर पूर्ण रूप से ध्यान दिया जाता है। इस लिये अध्यापक-शिक्षा के अन्तर्गत इस प्रकार की व्यवस्था का करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है जिससे भावी शिक्षकों में शिक्षण के लिये आत्म विश्वास की भावना जागृत हो और शिक्षण के कौशलों को समुचित ढंग से विकास हो।

पाठ योजना का अर्थ

जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिये योजना की आवश्यकता पड़ती है। बिना योजना के हम वांछनीय उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकते। इसी प्रकार शिक्षक भी बिना पाठ योजना बनाये अगर कक्षा में प्रवेश करता है तो वह छात्र-छात्राओं को पढ़ाने में सफल नहीं हो सकता। इस लिये प्रत्येक शिक्षक के लिये यह आवश्यक है कि वह कक्षा में पढ़ाने से पहले भली भांति पाठ योजना तैयार करे। बौसिंग महोदय के अनुसार - पाठ योजना उस विवरण का नाम है जिसमें यह स्पष्ट किया जाता है कि किसी पाठ से किन-किन लक्ष्यों की प्राप्ति होगी और किन साधनों के माध्यम से शिक्षण प्रक्रियाओं को सम्पन्न करना है। नियोजित ढंग से शिक्षा देने से तात्पर्य है निश्चित उद्देश्य, निश्चित पाठ्यक्रम और नियोजित शिक्षण प्रक्रियाओं का होना। नियोजित एवं सुचारू रूप से शिक्षण के लिये पाठ योजना का तैयार करना अत्यन्त आवश्यक है।

आई. के. डेवीज ने अपने प्रथम सोपान में पाठ-योजना की रचना को विशेष महत्त्व दिया है। शिक्षण व्यवस्था के सभी पक्षों के व्यावहारिक रूप का आलेख ही पाठ-योजना है। कक्षा-शिक्षण की पूर्व अवस्था में पाठ-योजना तैयार की जाती है।

पाठ-योजना के सम्बन्ध में डेविस महोदय का विचार है कि कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक को पूरी तैयार कर लेनी चाहिये क्योंकि शिक्षक की प्रगति के लिये कोई बात इतनी बाधक नहीं है जितनी कि शिक्षण की तैयारी।

Scanned with CamScanner

विनिंग और विनिंग के अनुसार- "दैनिक पाठ-योजना के निर्माण में उद्देश्यों को परिभाषित करना, पाठ्य वस्तु का चयन करना तथा उसे क्रम बद्ध रूप में व्यवस्थित करना और प्रस्तुतीकरण की विधियों यथा प्रक्रिया का निर्धारण करना है।"

शिक्षण की सुविधा के लिये शिक्षक जिस पाठ्य वस्तु को पढ़ाना चाहता है उसे छोटी इकाईयों में बांट लेता है। एक इकाई की विषय वस्तु को वह एक कालांश (अवधि) में पढ़ाता है। पढ़ाने के लिये उस विषय वस्तु की एक रूपरेखा तैयार करता है जिसे पाठ-योजना कहते हैं। भावी शिक्षकों को शिक्षण अभ्यास के समय पाठ-योजनाओं को लिखित रूप में तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। भावी शिक्षक के लिये कक्षा शिक्षण से पूर्व पाठ-योजना की तैयारी अत्यन्त आवश्यक है।

पाठ-योजना का सबसे पहला पद शिक्षण लक्ष्यों का निर्धारण है। दूसरे पद पर इन शिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु किये जाने वाले कार्यों का निर्धारण होता है। तीसरे और अन्तिम पद पर यह निश्चित किया जाता है कि पाठ शिक्षण के प्रभाव का मापन और मूल्यांकन किस प्रकार किया जाना है। भावी शिक्षक कक्षा में पढ़ाने से पूर्व यह सब निश्चित कर उसे लेखनी बद्ध कर लेता है और इससे उसमें स्वाभाविक रूप से आत्म विश्वास आ जाता है। इस प्रकार पाठ योजना की सहायता से समय और शक्ति का सदुपयोग होता है और कक्षा में सफल शिक्षण सम्भव होता है। इसके लिये पाठ योजना का निर्माण सूझ-बूझ के साथ उचित ढंग से किया जाना चाहिये।

पाठ-योजना की आवश्यकता और महत्त्व

पाठ-योजना शिक्षण-प्रक्रिया का मुख्य आधार है। पाठ-योजना शिक्षकों और भावी शिक्षकों का पग पग पर मार्ग दर्शन करती है। पाठ योजना के अभाव में शिक्षक अपने लक्ष्य से भटक सकता है। डेविस महोदय ने पाठ-योजना की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा है- "शिक्षक के लिये कोई वस्तु इतनी घातक नहीं है, जितनी की पाठ की तैयारी का कम होना।" पाठ-योजना के बनाने से शिक्षक में आत्मविश्वास आ जाता है और वह सफल ढंग से पढ़ाने के लिये अपने को समर्थ समझने लगता है। पाठ-योजना की आवश्यकता और उसके महत्त्व को निम्न ढंग से स्पष्ट किया गया है -

1. कक्षा में शिक्षण प्रक्रियाओं एवं सहायक सामग्री की पूर्ण रूप से जानकारी हो जाती है।
2. पाठ के प्रस्तुतीकरण की क्रमबद्धता और विषय वस्तु को निश्चित कर लिया जाता है।
3. विषय-वस्तु के महत्त्वपूर्ण तत्त्वों के क्रम, चिन्तन एवं विकास में क्रमबद्धता स्थापित कर ली जाती है।

Scanned with CamScanner

पाठ-योजना की विशेषताएं

शिक्षण प्रक्रिया की सफलता के लिये पाठ-योजना का बनाना अत्यन्त आवश्यक है। पाठ-योजना के बिना शिक्षण प्रक्रिया को रोचक, सशक्त और प्रभावशाली नहीं बनाया जा सकता। इस लिये प्रत्येक शिक्षक को कक्षा में पढ़ाने से पूर्व सोच समझ पर पाठ-योजना तैयार करनी चाहिये। पाठ-योजना में निम्नलिखित विशेषतायें होनी चाहियें –

1. पाठ योजना मौखिक एवं लिखित रूप में सोच समझ तैयार की जानी चाहिये ताकि शिक्षक के पढ़ाने में निश्चितता आये और वह अपने लक्ष्य से न भटके।
2. पाठ योजना में शिक्षण के लक्ष्यों का स्पष्ट रूप से उल्लेख होना चाहिये। शिक्षक को जितनी अधिक लक्ष्य के बारे में स्पष्टता होगी, वह उनकी प्राप्ति के लिये उतना ही अधिक प्रयत्नशील होगा।
3. इसमें शिक्षण पदों का स्पष्टता से उल्लेख होना चाहिये। शिक्षण क्रम हमेशा तार्किक और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर होना चाहिये।
4. अच्छी पाठ योजना सदैव छात्र-छात्राओं के पूर्व अर्जित ज्ञान पर आधारित होती है। इससे पाठ का विकास छात्रों की सहायता से होता है।
5. इसमें यह भी स्पष्ट होना चाहिये कि किन तथ्यों अथवा क्रियाओं को, किन विधियों, किन युक्तियों और किन शिक्षण उपकरणों की सहायता से स्पष्ट किया जायेगा।
6. इस बात का उल्लेख भी किया जाना चाहिये कि छात्र-छात्राओं की व्यक्तिगत सहायता कब करने की आवश्यकता होगी।
7. पाठ योजना की शिक्षण प्रक्रिया में यह भी स्पष्ट हो कि शिक्षक क्रिया कब होगी और छात्र क्रिया कब होगी।
8. पाठ योजना सुन्दर लेख में क्रम बद्धता के साथ लिखी हुई होनी चाहिये।
9. इस बात का भी स्पष्टीकरण हो कि पाठ की कितनी अवधि होनी चाहिये और पाठ इस अवधि में पूरा हो जाना चाहिये।
10. पाठ योजना में अनावश्यक तथ्यों को किसी प्रकार का कोई स्थान नहीं देना चाहिये।
11. अच्छी पाठ योजना अपने आप में तभी पूर्ण मानी जाती है, जब उसमें शिक्षण के प्रभाव के मापन और मूल्यांकन के लिये भी स्थान हो। इससे शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को अपने में सुधार लाने के लिये अवसर मिलता है।
12. पाठ योजना में कक्षा क्रियाओं के उल्लेख के साथ-साथ इस बात का भी स्पष्टीकरण होना चाहिये यथा पाठ के अभ्यास एवं पूर्ति के लिये छात्र-छात्राएं गृहकार्य करेंगे। क्योंकि सीखे हुए ज्ञान का प्रयोग करने से स्थाईपन आ जाता है।

Scanned with CamScanner

हरबर्ट और आर.सी.इ.एम. (R.C.E.M) उपागमों के पदों का हिन्दी शिक्षण में प्रयोग। इन उपागमों के गुण (लाभ) और सीमाएं। हिन्दी शिक्षण में शिरोपरि प्रक्षेपक (ओवर हैड प्रोजैक्टर) में प्रयोग में आने वाली पारदर्शी सामग्री को तैयार करना।

(Steps for preparing lesson plans for teaching Hindi using Herbarian and R.C.E.M approaches. Advantages and Limitations of these approaches. Preparation of transparencies for OHP in teaching Hindi.)

पाठ योजना निर्माण के विभिन्न उपागम

पाठ योजना के लिखित रूप के निर्माण के लिये अनेक प्रारूपों को अपनाया गया है। इनमें से पाठ योजना के तीन प्रारूप अधिक प्रचलित हैं जो निम्नलिखित हैं –

(I) हरबर्ट पाठ योजना का प्रारूप
(Herbertian Paradigm to Lesson Planning)

(II) ब्लूम या मूल्यांकन पाठ योजना का प्रारूप
(Bloom's or Evaluation Paradigm to Lesson-Planning)

(III) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण का प्रारूप
(NCERT Paradigm to Lesson Planning)

पाठ योजना को किस रूप में तैयार और प्रस्तुत किया जाये, इससे सम्बन्धित अनेक उपागमों का विकास हुआ है। हमारा देश सदियों तक परतन्त्र रहा है। इस परतन्त्रता के कारण हमें आगे बढ़ने से तो रोका ही गया और इसके साथ-साथ जो कुछ हमारे पास अपना था उससे भी हमें वंचित कर दिया गया। भारत में अंग्रेजों के राज्य में शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था आरम्भ हुई। पाठ योजना निर्माण हेतु उन्होंने हमें जर्मन शिक्षा शास्त्री हरबर्ट के उपागम से परिचित कराया गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में अमेरिका के आर्थिक सहयोग से एन. सी. ई. आर. टी. (NCERT) की स्थापना हुई। इस शिक्षा संस्था ने शिक्षा के क्षेत्र में अमेरिकी उपागमों को स्वीकार करना प्रारम्भ किया। पाठ योजना के निर्माण के लिये भी इन्होंने अमेरिका के प्रोफेसर ब्लूम महोदय के उपागम का समर्थन किया। वर्तमान में हमारे देश के शिक्षण महाविद्यालयों अथवा विभागों में प्रायः इन्हीं दो उपागमों के अनुसार पाठ योजनायें तैयार की जाती हैं। लेकिन यह बात अवश्य है कि

Scanned with CamScanner

भिन्न-भिन्न शिक्षक शिक्षण महाविद्यालयों अथवा विभागों में इन्हें अपने अपने तरीके से थोड़े फेर बदल के साथ अपना रहे हैं। इस लिये हमारे लिये यह आवश्यक हो गया है कि इन दोनों उपागमों का तुलनात्मक अध्ययन करें।

I. हरबर्ट उपागम

प्रसिद्ध जर्मन शिक्षा शास्त्री हरबर्ट ने पाठ-योजना का निर्माण करने के लिये जिस पद्धति को विकसित किया उसे ही हरबर्ट उपागम कहा जाता है। हरबर्ट पुर्वानुवर्ती प्रत्यक्ष (Apperception) के सिद्धान्त में विश्वास करते थे। उनके अनुसार मन तथा पर्यावरण के सम्पर्क से विचारों की उत्पत्ति होती है। ये विचार सर्वप्रथम चेतन मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं और फिर अचेतन मस्तिष्क में चले जाते हैं। जब कभी मनुष्य के सामने इस अचेतन मस्तिष्क के विचारों से सम्बन्धित कोई नया विचार आता है तो ये विचार चेतन मस्तिष्क पर आ जाते हैं और नये विचारों से सम्बन्ध स्थापित करते हैं और फिर ये सब विचार अचेतन मस्तिष्क में चले जाते हैं। इस प्रकार ज्ञान की श्रृंखला की वृद्धि होती रहती है। यही कारण है कि हरबर्ट ने इस बात पर विशेष रूप से बल दिया है कि छात्र छात्राओं का शिक्षण करते समय ज्ञात से अज्ञात की ओर चलना चाहिये और छात्रों को जो भी नया ज्ञान दिया जाये, उसका सम्बन्ध छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान से जोड़ देना चाहिये।

हरबर्ट सीखने में संचित ज्ञान सिद्धान्त (Apperceptive Mass Theory) को मानता है। इस सिद्धान्त की धारणा है कि ज्ञान बाहर से दिया जाता है और वो संचित होता रहता है। हरबर्ट ने कहा कि सीखना तभी सम्भव है जब सीखने वाला क्रियाशील हो। उनके अनुसार क्रियाशील होने के लिये मस्तिष्क चार अवस्थाओं से गुजरता है- अवलोकन, आशा, मांग और क्रिया। उन्होंने मानसिक क्रियाओं के इस क्रम में शिक्षण के चार पद निश्चित किये हैं - स्पष्टता, सम्बन्ध, व्यवस्था और व्यावहारिक प्रयोग। स्पष्टता से अभिप्राय है कि छात्र-छात्राओं के समक्ष विषय सामग्री को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाये। सम्बन्ध से तात्पर्य है कि विषय-वस्तु का सम्बन्ध छात्र-छात्राओं के पूर्व अर्जित ज्ञान से जोड़ा जाये। व्यवस्था का अर्थ है कि विषय-वस्तु को क्रमबद्ध ढंग से व्यवस्थित किया जाये। व्यावहारिक प्रयोग से तात्पर्य है कि सीखे हुए ज्ञान का प्रयोग करने का अवसर दिया जाये।

आगे चलकर ज़िलर (Ziller) जो हरबर्ट का शिष्य था उसने चार पदों के स्थान पर पांच पदों को माना है - तैयारी, प्रस्तुति, तुलना, सामान्यीकरण और प्रयोग। इन्हीं पदों को हरबर्ट की पंचपदी प्रणाली कहा जाता है। अब तैयारी के स्थान पर प्रस्तावना का प्रयोग किया जाता है और शेष चार पदों को उसी प्रकार से स्वीकार किया गया है। ये पांचों पद बड़े मनोवैज्ञानिक एवं तार्किक क्रम से प्रस्तुत किये गये हैं। इस क्रम के अनुसार शिक्षण करने में आगमन और निगमन, दोनों विधियों का प्रयोग होता है और सीखना स्थाई होता

Scanned with CamScanner

है। इस प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि प्रस्तुतीकरण पर विशेष बल दिया जाता है। छात्रों की रूचियों, अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा सम्बन्धों पर ध्यान नहीं दिया जाता है। इसमें स्मृति स्तर के शिक्षण को विशेष महत्त्व दिया जाता है। इससे छात्रों के रटने पर बल दिया जाता है। कुछ विद्वानों का यह भी कहना है कि केवल ज्ञान पक्ष पर बल दिया जाता है और भावपक्ष और क्रिया पक्ष की अवहेलना होती है।

ब्लूम उपागम

ब्लूम शिक्षण प्रक्रिया को उद्देश्यपूर्ण मानता है। इस लिये शिक्षा की सभी प्रक्रियाएं उद्देश्य केन्द्रित होती हैं। उनके अनुसार किसी कार्य का परिणाम ही उद्देश्य कहलाता है। ब्लूम महोदय ने स्पष्ट किया है कि शिक्षण लक्ष्यों का स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध सीखने के उद्देश्यों से होता है और सीखने का अर्थ है छात्र के व्यवहार में परिवर्तन। उनके विचार में यदि शिक्षण लक्ष्यों को व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखा जाए तो वे अधिक निश्चित और स्पष्ट होंगे और तब शिक्षण की विधियां और मूल्यांकन की विधियां अधिक सुनिश्चित और स्पष्ट होंगी। उन्होंने व्यवहार परिवर्तन को तीन वर्गों में विभाजित किया है - ज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोशारीरिक (क्रियात्मक)। इन तीनों को भी उन्होंने तथा उनके सहयोगियों ने छः - छः पदों में बांटा है और इनमें से प्रत्येक पद को कई-कई मानसिक योग्यताओं के रूप में विभाजित किया और पाठ शिक्षण लक्ष्यों को इन मानसिक योग्यताओं के आधार पर व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखने की बात कही है।

ब्लूम के अनुसार शिक्षा के तीन पद होते हैं - शैक्षिक उद्देश्य, अधिगम के अनुभव और व्यवहार परिवर्तन। इस लिये इनकी शिक्षा के प्रति जो दृष्टिकोण है - उसको त्रिपदी प्रक्रिया के रूप में लिया गया है। त्रिपदी प्रकिया के अन्तर्गत कोई भी पाठ पढ़ाने से पूर्व शिक्षक को उस पाठ की पाठ्य सामग्री का विश्लेषण करके यह देखना चाहिये कि उससे किन शिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति होगी और उससे सीखने वालों के व्यवहार में क्या परिवर्तन आयेगा ? फिर इस बात को निश्चित करना चाहिये कि इन शिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सीखने की परिस्थितियों का निर्माण करने के लिये वह किन विधियों, युक्तियों एवं उपकरणों का प्रयोग करेगा और इस प्रक्रिया में वह क्या कार्य करेगा और छात्र क्या कार्य करेंगे। उसे यह भी निश्चित् करना चाहिये कि वह शिक्षण के प्रभाव का मूल्यांकन कैसे करेगा ? वास्तविकता तो यह है कि शिक्षण के प्रभाव का सही मापन और मूल्यांकन करने के लिये ब्लूम महोदय ने शिक्षण लक्ष्यों को व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखने पर बल दिया था। इस लिये कुछ शिक्षा शास्त्री इसे मूल्यांकन उपागम भी कहते हैं।

इस उपागम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें तीनों पदों में सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इसमें शिक्षण के बाद यह लाभ होता है कि शिक्षक अपनी भूल में सुधार साथ-साथ कर सकता है। इस उपागम में अनेक अच्छाईयों के साथ-साथ कुछ सीमाएं भी हैं। इस उपागम में शिक्षक की सारी शक्ति शिक्षण लक्ष्यों को व्यावहारिक परिवर्तन के रूप

Scanned with CamScanner

में अभिव्यक्त करने और इस व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन करने में व्यय होती है। ब्लूम और उनके सहयोगियों ने जिस व्यवहार परिवर्तन की बात की है, वह कुछ आश्चर्यस्पद है। व्यक्ति के व्यवहार को पहले तीन भागों में बांटना तो तर्क संगत है लेकिन फिर प्रत्येक व्यवहार को छः - छः पदों और प्रत्येक वर्ग के प्रत्येक पद को कई-कई मानसिक योग्यताओं के आधार पर विभाजित करके उन्होंने शिक्षण की प्रक्रिया को बहुत कठिन बना दिया है। दूसरी बात यह है कि 40 मिनट की अवधि में छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन आ सकेगा और उसका सही ढंग से मूल्यांकन होगा, यह बात सम्भव दिखाई नहीं देती। भाषा तो कला है और इसे सीखने के लिये बहुत अधिक अभ्यास करना पड़ता है। भाषा का ज्ञान प्रदान करने और छात्रों में किसी कौशल का विकास करने हेतु 40 मिनट अपर्याप्त हैं।

दोनों उपागमों में सन्तुलन और समन्वय

भारत देश में स्थापित शिक्षण महाविद्यालयों और विभागों को निकट से देखने पर यह अनुभव होता है कि प्रगतिशील शिक्षक हरबर्ट उपागम की त्रुटियों अथवा कमियों के प्रति सचेत हुए हैं। वे अब इस उपागम का अन्धानुकरण नहीं करते बल्कि आवश्यकतानुसार अनुसरण करते हैं, शिक्षण लक्ष्यों को निश्चित और स्पष्ट रूप से लिखते हैं और इन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु की जाने वाली शिक्षक और छात्र की क्रियाओं का स्पष्ट उल्लेख करते हैं। इसके साथ-साथ वे शिक्षा के उपकरणों और उनके प्रयोग और शिक्षण के प्रभाव का मूल्यांकन करने की विधियों का भी स्पष्ट उल्लेख करते हैं। दूसरी तरफ अगर हम देखते हैं तो ब्लूम उपागम का अनुसरण करने वाले शिक्षण लक्ष्यों को व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखने के अतिरिक्त बाकी सब कार्यों को हरबर्ट द्वारा सुझाये गये उपागम के अनुसार करते हैं। वर्तमान में इन दोनों उपागमों में इतना ही अन्तर है कि वे अधिगम के अनुभव शीर्षक के कालम में लिखते हैं। इन दोनों उपागमों में सन्तुलन और समन्वय किया जाना चाहिये।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि शिक्षण किसी विधि से भी करें, शिक्षण का क्रम हरबर्ट के उपागम के अनुसार होना चाहिये। लेकिन यहां पर इस बात का स्पष्टीकरण करना तर्क संगत और प्रासंगिक होगा कि प्रत्येक विषय के प्रत्येक पाठ के शिक्षण के लिये पांच पदों का अनुसरण करना आवश्यक नहीं होता। जहां पर पदों का अनुसरण करना आवश्यक हो, वहीं पर ऐसा करना उचित होगा। दूसरी ओर अगर हम ध्यान दें तो ब्लूम उपागम में शिक्षण लक्ष्यों को व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखना मूल्यांकन की दृष्टि से लाभकारी अवश्य होता है, परन्तु उसमें जितनी शक्ति और समय लगता है उसके मुकाबले में लाभ बहुत कम होता है। इसलिये हमारे लिये इतना करना ही पर्याप्त होगा कि शिक्षण लक्ष्यों को निश्चित करते समय उनसे होने वाले व्यवहार परिवर्तन की मस्तिष्क में कल्पना अवश्य कर लें क्योंकि ऐसा करने से शिक्षण को सही दिशा मिलेगी।

Scanned with CamScanner

पाठ योजना की रूप रेखा

इस पाठ योजना में हरबर्ट की पंच पदी प्रणाली का अनुसरण किया जाता है। ये इस प्रकार हैं - (1) योजना (2) प्रस्तुतीकरण (3) तुलना एवं समरूपता (4) सामान्यीकरण (5) प्रयोग। इन पांच पदों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है -

(1) योजना - इस सोपान (पद) के अन्तर्गत शिक्षक विषय वस्तु के सभी तत्त्वों को अपने चेतन मस्तिष्क में ग्रहण कर लेता है।

(2) प्रस्तुतीकरण - शिक्षक नवीन तथ्यों को छात्रों के पूर्वज्ञान से सम्बन्ध जोड़कर प्रस्तुत करता है। प्रस्तुतीकरण बोध प्रश्नों एवं विकासात्मक प्रश्नों के द्वारा किया जाता है।

(3) तुलना एवं समरूपता - इसमें शिक्षक नवीन तथ्यों का पूर्व तथ्यों के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है।

(4) सामान्यीकरण - इस पद में छात्र दो या दो से अधिक तथ्यों में समानता ढूंढने का प्रयास करता है ताकि वो नियम निकालने में सफल हो सके।

(5) प्रयोग - शिक्षक द्वारा इस प्रकार की परिस्थितियां उत्पन्न की जाती हैं जिससे छात्र सीखे हुए ज्ञान का प्रयोग कर सकें।

इन उपरोक्त पांच सोपानों के आधार पर पाठ योजना की रूप रेखा तैयार की जा सकती है जिसके प्रमुख पहलु निम्नलिखित हैं -

I. विषय, प्रकरण, कक्षा, विभाग, अवधि तथा दिनांक।

II. सामान्य उद्देश्य।

III. विशेष उद्देश्य।

IV. प्रस्तावना।

V. उद्देश्य कथन।

VI. प्रस्तुतीकरण बोध प्रश्नों के द्वारा।

VII. विकासात्मक प्रश्न।

VIII. स्पष्टीकरण।

IX. चाकबोर्ड सार।

X. पुनरावृति प्रश्न।

XI. गृहकार्य।

इस पाठ योजना में उपरोक्त बिन्दुओं का अनुसरण करते हैं। इन बिन्दुओं का संक्षिप्त विवरण निम्न है।

(I) विषय, कक्षा तथा प्रकरण :- यह बिन्दु पाठ-योजना का सीमाकरण करता है। क्योंकि सबसे पहले प्रकरण (उपविषय) का चयन किया जाता है और उसका शिक्षण

Scanned with CamScanner

किस स्तर पर किया जाये, शिक्षण की तिथि, कक्षा और शिक्षण की अवधि को पहले से निर्धारित कर लिया जाता है। भावी शिक्षक किस विद्यालय में शिक्षण करेगा इसका निर्णय भी पहले से ही कर लिया जाता है।

(II) सामान्य उद्देश्य :– सामान्य उद्देश्यों का आधार प्रथम बिन्दु होता है। भाषा शिक्षण में अनेक विधाएं होने के कारण उनके सामान्य उद्देश्य भी भिन्न-भिन्न होते हैं। जैसे कविता, गद्य, कहानी, नाटक, निबन्ध और व्याकरण शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों में कुछ सीमा तक समानता होने पर भी भिन्नता पाई जाती है। कक्षा के स्तर के अनुसार भी सामान्य उद्देश्यों में भिन्नता होती है। सामान्य उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु पाठ योजना सक्षम साधन है। परन्तु चालीस मिनट की अवधि में विशेष उद्देश्यों की प्राप्ति ही सम्भव हो सकती है।

(III) विशेष उद्देश्य :– विशेष उद्देश्यों का सम्बन्ध उद्देश्यों से होता है लेकिन विशेष उद्देश्य यथा पाठ-वस्तु के अनुसार होते हैं। भाषा शिक्षण में अधिकतर विशेष उद्देश्यों का सम्बन्ध भाषा के कौशलों के विकास से होता है। इस प्रकार पाठ्य सामग्री के आधार पर ही विशेष उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं।

(IV) प्रस्तावना :– प्रस्तावना का सम्बन्ध पाठ के प्रारम्भ करने से होता है। शिक्षक पहले से ही छात्रों से जो प्रश्न पूछने होते हैं उनका निर्णय कर लेता है। प्रस्तावना के प्रश्न छात्रों के पूर्वज्ञान से सम्बन्धित होते हैं। इन प्रश्नों के द्वारा ही शिक्षक छात्रों को नवीन पाठय-वस्तु (प्रकरण) से परिचित कराता है। इन प्रश्नों का प्रयोग बड़ी सूझ-बूझ के साथ किया जाता है क्योंकि इनका सम्बन्ध प्रकरण की भूमिका से होता है।

(V) उद्देश्य कथन :– प्रस्तावना के प्रश्न पूछने के बाद जब छात्र प्रकरण से सम्बन्धित उत्तर देने में समर्थ होते हैं तो शिक्षक शिक्षण हेतु कक्षा में प्रकरण की घोषणा कर देता है।

(VI) विकासात्मक प्रश्न :– उद्देश्य कथन के बाद शिक्षक पढ़ाना प्रारम्भ कर देता है और छात्रों से प्रश्न पूछते हुए पाठ का विकास करता है। इन प्रश्नों को विकासात्मक प्रश्न कहते हैं। ये प्रश्न छात्रों की तर्क-वितर्क शक्ति का विकास करने के लिये भी सहायक होते हैं।

(VII) स्पष्टीकरण :– शिक्षण करते समय जब छात्रों को समझने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई आती है तो शिक्षक उन तथ्यों का स्पष्टीकरण कर देता है।

(VIII) चाकबोर्ड कार्य :– शिक्षक जब यह समझता है कि केवल सुनने मात्र से स्पष्टीकरण सम्भव नहीं है तो वह पाठ्य-वस्तु के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को समझने के लिये चाकबोर्ड का प्रयोग करता है।

Scanned with CamScanner

(IX) पुनरावृत्ति प्रश्न :– पढ़ाये गये प्रकरण से सम्बन्धित जो प्रश्न पूछे जाते हैं, उनको पुनरावृत्ति के प्रश्न कहते हैं। शिक्षक इन प्रश्नों के पूछने से पहले चाकबोर्ड कार्य को मिटा देता है और छात्रों को उत्तर पुस्तिकाओं को बन्द करने के निर्देश देता है। इन प्रश्नों के द्वारा पाठ को दोहराने एवं अभ्यास करने का अवसर मिलता है। इन प्रश्नों के माध्यम से यह भी पता चलता है कि छात्रों ने कितना कुछ सीख लिया है।

(X) गृहकार्य :– पुनरावृत्ति के बाद शिक्षक विद्यार्थियों को प्रकरण से सम्बन्धित गृहकार्य देता है। गृहकार्य का उद्देश्य भी पाठ को दोहराना और उसका अभ्यास करना होता है।

हरबर्ट पाठ योजना की कमियां

1. प्रस्तुतीकरण पर आवश्यकता से अधिक बल देना।
2. शिक्षण उद्देश्यों और सीखने की परिस्थितियों को पूरी तरह से ध्यान में नहीं रखा जाता है।
3. शिक्षण प्रक्रिया की सार्थकता और व्यावहारिकता पर ध्यान नहीं दिया जाता है।
4. पाठ योजना में लचकीलापन न होने से पाठ की व्यावहारिकता में कमी आ जाती है।

वास्तविकता यह है कि हर विषय के किसी भी पाठ को पढ़ाने के लिये इसका प्रयोग करना उचित नहीं है। भाषा के गद्य, पद्य आदि जैसे पाठों में सामान्यीकरण की कोई आवश्यकता नहीं होती। यदि कोई शिक्षक इन सभी पदों का बिना सोचे समझे प्रयोग करता है तो उनका शिक्षण नीरस और प्रभाव रहित हो जाता है। इस उपागम के माध्यम से भावात्मक और क्रियात्मक पाठों को पढ़ाना कठिन कार्य है।

निष्कर्ष

वर्तमान परिस्थितियों में आवश्यकता इस बात की है कि पाठ्य सामग्री की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए इस उपागम के पदों का प्रयोग करना चाहिये। जिस विषय के प्रकरण में जिस सोपान की आवश्यकता हो उसी का प्रयोग करना चाहिये। आज शिक्षण महाविद्यालयों में हरबर्ट के सोपानों को परिष्कृत रूप में अपना कर निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर पाठ योजना बनाई जाती है।

1. विषय, उपविषय, कक्षा, अवधि, दिनांक आदि का उल्लेख करना।
2. उद्देश्य।
3. सहायक सामग्री।
4. अनुमानित पूर्वज्ञान।
5. पूर्वज्ञान परीक्षा अथवा प्रस्तावना।

Scanned with CamScanner

पाठ योजना की रूप रेखा

ब्लूम उपागम पर आधारित पाठ योजना की रूप रेखा निम्न है –

तिथि ..... कक्षा .....

भावी शिक्षक का अनुक्रमांक ..... अवधि .....

विषय ..... विद्यार्थियों की औसत आयु .....

उपविषय .....

1. शिक्षण लक्ष्य (वांछनीय व्यवहार परिवर्तन के रूप में)
2. पूर्वज्ञान।
3. पूर्वज्ञान परीक्षा।
4. उद्देश्य कथन।
5. प्रस्तुतीकरण।

शिक्षण बिन्दु	शिक्षक क्रियाएं	छात्र क्रियाएं	शिक्षण विधि एवं साधन	मूल्यांकन

6. पुनरावृत्ति
7. गृहकार्य

इस प्रकार शिक्षक अपनी सुविधा और पाठ्य-वस्तु के अनुसार इन दोनों उपागमों के आधार पाठ-योजना का निर्माण कर सकता है। फिर भी इन दोनों में से आज भी हरबर्ट उपागम थोड़े से परिवर्तन के साथ अधिक अपेक्षित है। इसमें उद्देश्य के सोपान में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। इस लिये वर्तमान से दोनों उपागमों का समन्वय करना अधिक उचित होगा या फिर शिक्षक विषय एवं उसकी पाठ्य सामग्री और कक्षा की परिस्थितियों को देखते हुए किसी एक उपागम का या फिर इन दोनों उपागमों के अच्छे पहलुओं को ध्यान में रखते हुए पाठ योजना तैयार कर सकता है।

Scanned with CamScanner

जायेगा।

कहानी पाठ योजना

अनुक्रमांक :

कक्षा : सातवीं

विषय : हिन्दी (कहानी)

अवधि : 40 मिनट

उपविषय : जैसी करनी वैसी भरनी

औसत आयु : 14

सहायक सामग्री : कहानी से सम्बन्धित चार्ट

तिथि :

सामान्य उद्देश्य :

1. बालको की मानसिक एवं कल्पना शक्ति का विकास करना।
2. बालकों में श्रवण कौशल एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना।
3. बालकों के शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
4. बालकों का स्वस्थ मनोरंजन करना।

विशिष्ट उद्देश्य : बालकों को कहानी के द्वारा यह समझाना कि किसी के साथ भी दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिये क्यों कि दुर्व्यवहार के परिणाम अच्छे नहीं होते।

पूर्वज्ञान : बालकों को थोड़ी बहुत अच्छे व्यवहार और बुरे व्यवहार के बारे में जानकारी है।

पूर्वज्ञान परीक्षा (प्रस्तावना)

1. बालक आप किसी से अच्छा व्यवहार करते हो तो बदले में कैसे व्यवहार की आशा रखते हो ?
2. किसी के साथ बुरा व्यवहार करोगे तो फिर बदले में कैसा व्यवहार चाहोगे ?
3. आप की तरह क्या इस बात को जानवर भी समझते हैं ?
4. व्यवहार से सम्बन्धित कोई ऐसी कहानी बताओ जिसमें जानवर की भूमिका अहं हो ?

उद्देश्य कथन : हम आज जैसी करनी वैसी भरनी कहानी पढ़ेंगे।

प्रस्तुतीकरण : कहानी का प्रस्तुतीकरण किया जायेगा और पाठ का विकास प्रश्नोत्तर एवं वर्णनात्मक विधि द्वारा किया जायेगा।

Scanned with CamScanner

विषय वस्तु	छात्राध्यापक कार्य	छात्र क्रिया एवं चाकबोर्ड कार्य
किसी नगर में एक राजा राज्य करता था। राजा के पास हाथी था। वह हाथी बहुत समझदार और स्वामीभक्त था।	हाथी में कौन सा गुण था ?	हाथी समझदार और स्वामीभक्त था।
हाथी प्रतिदिन सायंकाल को स्नान करने जाया करता था। मार्ग में एक दर्जी की दुकान थी । नदी की तरफ जाते समय हाथी प्रतिदिन दर्जी की दुकान पर ठहर जाता और खिड़की के मार्ग से अपनी सूंड को अन्दर कर देता था। दर्जी भी हाथी को कुछ न कुछ खाने को दे दिया करता था।	हाथी रोजाना क्या करने जाया करता था ?	हाथी नहाने के लिये नदी पर जाया करता था।
इस प्रकार उन दोनों में गहरी मित्रता हो गई।	हाथी की मित्रता दर्जी के साथ कैसे हुई ?	हाथी को दर्जी द्वारा कुछ न कुछ खाने को मिलता था।
प्रतिदिन की तरह हाथी दर्जी की दुकान पर पहुंचा और उसने अपनी सूंड खिड़की के रास्ते से अन्दर कर दी। उस दिन किसी कारणवश दर्जी क्रोध में बैठा था और उसने हाथी को कुछ देने की बजाय उसकी सूंड में सुई चुभो दी। हाथी को बहुत दर्द हुआ। वह कष्ट के मारे चीखता चिंघाड़ता हुआ नदी की तरफ चला गया।	जब हाथी दर्जी के पास जाता था तो दर्जी अच्छे व्यवहार को कैसे दर्शाता था ?	दर्जी हाथी को खाने की चीज देकर अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन करता था।
	प्रति दिन की तरह जब आज भी हाथी ने अपनी सूंड खिड़की के अन्दर की तो दर्जी ने क्या किया ?	दर्जी ने हाथी की सूड में सुंई चुभो दी।
	दर्जी ने हाथी की सूंड में सुई क्यों चुभो दी ?	दर्जी का मूड ठीक नहीं था और क्रोध की अवस्था में था।
	हाथी ने स्नान करने के बाद क्या किया ?	

Scanned with CamScanner

हाथी ने नदी पर जाकर स्नान किया और वापिस आते समय आपनी सूंड में काफी कीचड़ भर लिया जब वह राजा के महल की तरफ जा रहा था तो फिर वह दर्जी की दुकान पर ठहर गया। हाथी ने तुरन्त अपनी सूंड खिड़की के अन्दर कर दी और देखते ही देखते सारा कीचड़ दर्जी पर उडेल दिया। दर्जी के सभी कपड़े खराब हो गये और दुकान में कीचड़ ही कीचड़ हो गया।	जब हाथी दर्जी की दुकान पर ठहर गया तो उसने क्या किया ?	हाथी ने अपनी सूंड में कीचड़ भर लिया। उसने पहले की तरह सूंड खिड़की के अन्दर कर दी और सारा कीचड़ दर्जी पर उडेल दिया।
दर्जी अपने किये पर पश्चाताप करने लगा।	दर्जी ने यह सब कुछ देखने के बाद कैसा महसूस किया?	दर्जी को अपनी गलती का अहसास हुआ और पश्चाताप करने लगा।
बालको इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जो व्यक्ति जैसा करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। अर्थात् जैसी करनी वैसी भरनी।	यह कहानी हमें कैसे व्यवहार को करने के लिये प्रेरित करती है ?	इससे हमें अच्छे व्यवहार करने की प्रेरणा मिलती है।

बोध प्रश्न

1. **जैसी क्रिया वैसी प्रतिक्रिया। इस वाक्य का क्या अर्थ है।**
2. जैसा बोओगे वैसा काटोगे। इससे क्या तात्पर्य है।
3. बोये पेड़ बबूल के तो आम कहां से खाये। इसका अर्थ स्पष्ट करें।
4. मनुष्य को दूसरों से अच्छे व्यवहार की अपेक्षा रखने के लिये क्या करना चाहिये?
5. हिंसात्मक व्यवहार कैसा होता है ?
6. मनुष्य को हिंसात्मक व्यवहार न करके कैसा व्यवहार करना चाहिये ?

गृहकार्य : छात्राध्यापक छात्र-छात्राओं को अपने शब्दों में कहानी लिखकर लाने के लिये कहेगा।

Scanned with CamScanner